Volume-1, No.2 Aug.-2014, pp.121-123

पर्यावरण शिक्षा–भावी जीवन का आधार

डॉ0 विशाल मोहन सारश्वत, प्रवक्ता शिक्षा विभाग
कात्यायनी कालिज ऑफ एजुकेशन नेनो रोड़ सरधना मेरठ उत्तर–प्रदेश भारत।

पर्यावरण प्रदूषण मानव के लिए एक गम्भीर समस्या के रूप में प्रकट हुआ है। पर्यावरण प्रदूषण की विभीषिका और उसके सम्भावित खतरों के प्रति सर्वत्र चिन्ता प्रकट की जा रही है। समस्या से निपटने के लिए पर्यावरण संरक्षण और परिस्थितिकी सन्तुलन बनाये रखने की दिशा में अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। इन्हीं प्रयासों की श्रृंखला में पर्यावरण प्रबन्ध और पर्यावरणीय शिक्षा को एक अध्ययन विधा के रूप में विकसित करना और स्वीकृत करना और सम्मिलित करना है। पर्यावरण चेतना जाग्रत करने में उपयोगी होने के कारण पर्यावरणीय शिक्षा आ अध्ययन–अध्यापन निरन्तर महत्वपूर्ण होता जा रहा है।

पर्यावरणीय शिक्षा का सामान्य अर्थ ऐसी शिक्षा से है जो मानव समाज को पर्यावरण विषयक जानकारी प्रदान करे। चूँकि पर्यावरण का आधार मानव तथा जैविक एवं अजैविक सम्बन्धों का है इसलिए पर्यावरणीय शिक्षा मनुष्य को प्राकृतिक तथा भौतिक वातावरण के बीच सम्बन्धों का ज्ञान कराती है। पर्यावरणीय शिक्षा एक व्यापक विचार है जो पर्यावरण के विविध पक्षों, प्राकृतिक वर्तमान में यह 7 अरब के करीब है। जनसंख्या बढ़ने से पर्यावरण की गुणवत्ता में गिरावट आना प्रारम्भ हुई। नदियाँ जिनका जल स्वच्छ तथा निर्मल था प्रदुषित हुई और तालाबों का पानी उपयोग के लायक नहीं रह गया। वनों के क्षेत्रफल में गिरावट हुई। कायेले और लकड़ी को जलाने से वायु प्रदुषित हुई। इन सब परिवर्तनों से मानव का चिन्तित होना स्वाभाविक था। इस चिन्ता ने ही पर्यावरणीय अध्ययन और पर्यावरणीय शिक्षा को जन्म दिया।

भारत में पर्यावरण शिक्षा का प्रचार–प्रसार औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार से किया जा रहा है। भारत में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या पर ध्यान आकृष्ट करने के लिए 5 जून को अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस मनाया जाता है, 1972 में ही पर्यावरण विषयक समस्याओं की जाँच के लिए उचित सुझाव देने के लिए एक समिति का गठन किया गया है। इसी प्रकार की एक समिति 1980 में गठित की गयी, जिसकी संस्तुतियों पर 1980 में एक पृथक पर्यावरण विभाग स्थापित किया गया। 1985 में राजीव गाँधी के प्रधानमन्त्रित्व काल में पर्यावरण मंत्रालय की स्थापना की गयी जिसका उद्देश्य सम्पदाओं–भूमि, जल, वायु, खनिज, वन आदि के समुचित उपयोग एवं उन्हें भावी पीढ़ियों के लिए दीर्घकाली तक सुरक्षित रखने की शिक्षा देती है।

मानव के पृथ्वी पर जन्म से ही वह अपनी सभी प्रकार की आवश्यकताओं के लिए अपने पर्यावरण पर निर्भर रहता आया है। इसी से भोजन, सुरक्षा, ऊर्जा आवास एवं अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। प्रारम्भ में मानव की जनसंख्या कम थी और आवश्यकताएँ अत्यन्त सीमित। इस कारण पर्यावरण पर इसके दोहन का प्रभाव नगण्य था। धीरे–धीरे सभ्यता का विकास हुआ, मानव ने खेती करना और एक जगह बस कर रहना शुरू किया। ज्ञान, विज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा विज्ञान, गणित आदि का विकास हुआ। परिणामस्वरूप जनसंख्या में वृद्धि होना शुरू हुई जिसकी गति प्रारम्भ में कम, बाद में अधिक और वर्तमान में अधिकतम है। विश्व जनसंख्या जो सन् 1850 में 1 अरब थी वह सन् 1930 में 2 अरब और 1962 में 3 अरब हो गयी। सन् 1998 में यह बढ़कर 6 अरब हो गयी।

देश में पर्यावरण के सुधार हेतु कार्यक्रमों का नियोजन, नियन्त्रण एवं प्रोत्साहन देना है।

प्राकृतिक संसाधन सीमित हैं। मानव ने उनका अनुचित एवं स्वार्थयुक्त विदोहन किया। गाँधीजी ने कहा था–"प्रकृति में मनुष्य कीसभी आवश्यकताओं की पूर्ति की सामर्थ्य है, किन्तु वह उनकी लालच की पूर्ति नहीं कर सकती।" दुर्भाग्य से मनुष्य की स्वार्थमयी प्रवृति पर अंकुश न लग सका। प्रकृति का सयंमित उपयोग न करके असंयमित उपयोग किया। इस असंयम ने उसे मात्र उपभोक्ता बना दिया। भौतिकवाद के बढ़ने के कारण आध्यात्मिक एवं नैतिक प्रवृत्तियाँ प्रायः लुप्त हो गयीं। असंयमित मनुष्य ने यह ध्यान ही नहीं रखा कि प्रकृति की क्रियाओं में अनुचित हस्तक्षेप घातक हो सकता है। इसके परिणाम आज हमारे सामने हैं। जून 2013 में केदारनाथ में घटित घटना इसका ताजा उदाहरण है। पर्यावरण शिक्षा, ऐसी गम्भीर समस्याओं पर ध्यान आकृष्ट करने के लिए आवश्यक है।

प्रदूषण की समस्या से निबटने के लिए पर्यावरण शिक्षा आज आवश्यक एवं महत्वपूर्ण हो गयी है। समाज के प्रत्येक वर्ग को पर्यावरण के सम्बन्ध में अवगत कराना है कि प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण का अंश है। अतः प्रत्येक

व्यक्ति का यह दायित्व है कि वह पर्यावरण संरक्षण में योगदान करे। पर्यावरण शिक्षा समाज के लिए इस दिशा में बहुविध सहायता कर सकती है।

भारत में विश्वविद्यालय स्तर पर पर्यावरण शिक्षा को अब तक अलग अनुशासन के रूप में स्थान मिल चुका है। हालांकि इस दिशा में अभी ओर प्रयास की आवश्यकता है। देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में पर्यावरण एवं वानिकी पर आधारित कार्यक्रम प्रारम्भ किये गये हैं। भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद देश में वानिकी शिक्षा की विस्तार सम्बन्धी गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु है। देहरादून में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय वानिकी अकादमी की स्थापना इस दिशा में उल्लेखनीय प्रयास है।

वर्ष 1972 में 5 जून से 14 जून तक संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्टाकहोम में मानव पर्यावरण पर एक सम्मेंलन आयोजित किया जिसमें 114 देशों के प्रतिनिधि और गैर सरकारी संगठन शामिल हुए। इस सम्मेंलन में यह परिणाम निकाला गया कि सभी देशों को पर्यावरणीय शिक्षा की आवश्यकता है। इस सम्मेंलन के परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की स्थापना हुई। इसने संयुक्त राष्ट के साथ मिलकर अर्न्राष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम प्रारम्भ किया। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम ने वर्ष 1975 में बेलग्रेड में पर्यावरणीय शिक्षा पर अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय शिक्षा कार्यशाला का आयोजन किया। यह कार्यशाला पर्यावरणीय शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकास में ऐतिहासिक महत्व की साबित हुई।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी कहा गया है कि पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने की बहुत जरूरत है और यह जागरूकता बच्चों से लेकर समाज के सभी आयु वर्गों और क्षेत्रों में फैलनी चाहिए। इसे शिक्षा की पूरी प्रक्रिया में समाहित किया जायेगा।

आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या सम्पूर्ण विश्व की समस्या है। हमारे चारों ओर वायु, जल तथा मृदा प्रदूषित है। वनों की मात्रा काफी कम हो गई है, वन्य जीवों की अनेक प्रजातियाँ विलुप्त हो गई हैं और अनेक विलुप्त होने वाली है। ओजोन परत पर दबाव बढ़ गया है। ऐसे में पर्यावरण नियंत्रण के सरकारी व वैज्ञानिक प्रयासों के अतिरिक्त व्यक्ति को आत्म–चेतना का प्रयास व इन समस्याओं हेतु खुद को विलासिता के जीवन से मुक्त कर नियन्त्रित जीवन जीने के लिए प्रेरित करना होगा। उसके संस्कार एवं मूल्यों को पर्यावरण संरक्षण से सम्बद्ध करना होगा।

पर्यावरणीय मनोवैज्ञानिकों को उसके व्यवहार को प्रेरित कर बदलने में अहम् भूमिका निभानी होगी क्योंकि सामान्य शिक्षा में भी मनोवैज्ञानिकों ने बालक के व्यवहार परिवर्तन करने हेतु अनेक नियम, विधियों आदि का निर्माण किया है, जिससे मानव अपनी पाशविक प्रवृत्ति को छोड़कर एक सभ्य मानव बना है। पर्यारण प्रदूषण की समस्या से पिपटने के लिए प्रत्येक नागरिक को आगे आना होगा। प्रत्येक नागरिक की इस दिशा में भागीदारी आवश्यक एवं अनिवार्य है।

आज पर्यावरण से सम्बन्धित भावनाओं तथा जीवन मूल्यों को सकारात्मक रूप में परिवर्तित करना आवश्यक है। यह कार्य सम्पन्न करने के लिए पर्यावरणीय शिक्षा आवश्यक है, यह हमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का पाठ पढ़ाती है।

पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता और इसका महत्व आज सभी देशों के लिए समान रूप से है, क्योंकि विश्व के सभी देश आज किसी–न–किसी प्रकार के पर्यावरणीय संकट से ग्रस्त हैं। विकासशील देश और विकसित देश अपनी भिन्न–भिन्न समस्याओं के बावजूद इस बात पर एकमत हैं कि जितनी तेजी से आज पर्यावरण की समस्याएँ उठी हैं, चाहे वह जनसंख्या वृद्धि में दुष्प्रभाव के कारण हो अथवा औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप हो या कोई अन्य कारण हो उसको सरकार अथवा जनता अथवा दोनों ही सुधार कर पिछले रूप में नहीं ला सकतीं। प्राकृतिक संसाधनों का जिस दुर्दान्त रूप में शोषण हुआ है और उससे जो प्रकृति के संचित कोष रिक्त हो रहे हैं, उसे वापस पूरा नहीं किया जा सकता और यहाँ तक कि लोगों के अदूरदर्शितापूर्ण कार्य–व्यवहार से जो जल, वायु, भूमि का प्रदुषण हुआ है उसे निरूपदता में नहीं बदला जा सकता।

इस प्रकार 'पर्यावरण शिक्षा' एक सामान्य शिक्षा नही, बल्कि पर्यावरण की समस्या से उनके निदान, हल और सम्भावित बचाव सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने की शिक्षा है या उसे कहें कि 'पर्यावरण शिक्षा' प्राणी मात्र को वर्तमान में बचाये रखने तथा सुरक्षित भविष्य प्रदान करने की शिक्षा है तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है।

पर्यावरण की जानकारी शिक्षित और अशिक्षित दोनों प्रकार के लोगों के लिए आवश्यक है। हमारे देश में अधिकांश जनसंख्या गांवों में निवास करती है। ग्रामीण लोगों में आज भी अधिकांश लोग अशिक्षित हैं। इन लोगों को पर्यावरण तथा प्रदूषण के बारे में समझाना आवश्यक है। शिक्षित लोग भी पर्यावरण रक्षा के बारे में अधिक जानकारी नहीं रखते हैं। उनको भी पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण का बोध करना महत्वपूर्ण है। दूसरी ओर वे बालक हैं जो विद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और देश के भावी कर्णधार हैं। इनको विद्यालय जीवन से ही पर्यावरण शिक्षा देना आवश्यक है।

पर्यावरण शिक्षा एक प्रक्रिया है। इसमें छात्रों को ऐसे अधिगम अनुभव प्रदान किये जाते हैं जिससे वह पर्यावरण का ज्ञान, समझ, कौशल तथा जागरूकता प्राप्त

करके अपेक्षित अभिवृत्तियों को विकसित कर सके और प्राकृतिक तथा मानवीय परिस्थितियों में सम्बन्ध स्थापित कर सके। इससे मानवीय पर्यावरण का जनसंख्या, यातायात, तकनीकी, स्रोत नागरीकरण कृशि तथा योजनाओं से सम्बन्ध स्थापित होता है। 'पर्यावरण शिक्षा' में विविध प्रकार के पर्यावरण तथा शिक्षा आयामों, शिक्षण विधियों तथा प्रयोगात्मक कार्यों का प्रयोग किया जाता है। इससे छात्रों को कारण एवं प्रभाव सम्बन्ध स्थापित करने में सहायता मिलती है। पर्यावरण शिक्षा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। यह औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार से चलती रहती है। इसमें अन्तः अनुशासन आयाम का प्रयोग अधिक किया जाता है। इसका क्षेत्र अधिक व्यापक है।

संक्षेप में, पर्यावरण से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जो विश्व समुदाय को पर्यावरण की समस्याओं के सम्बन्ध में सचेत करे, उसकी समस्याओं को समझकर उनका समाधान खोज सके तथा भावी समस्याओं को भी रोक सके। पर्यावरण शिक्षा वर्तमान समस्याओं से बचाये रखने तथा भविष्य में सुरक्षित रहने की जागरूकता का प्रशिक्षण देती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पर्यावरणीय अध्ययन, ए0बी0 सक्सेना।
2. पय्रावरणीय मनोविज्ञान, डॉ0 रामपाल सिंह, प्रो0 अशोक सेवानी एवं डॉ0 वी0पी0 अग्रवाला।
3. पर्यावरण शिक्षा, डॉ0 राधा वल्लभ उपाध्यक्ष।
4. पर्यावरण शिक्षण, जै श्री।